एकात्म भारत के लिए
सुचेन्द्र मिश्रा द्वारा प्रकाशित

एकात्म भारत

@EkatmaBharat
दैनिक एकात्म भारत

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा,
गुरूवार विक्रम संवत् 2076

जो एकात्म है वही भारत है

12 दिसंबर 2019, इंदौर
e-paper : www.ekatmabharat.com

अयोध्या पर 18 पुनर्विचार याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में आज सुनवाई

आगरा

अयोध्या भूमि विवाद मामले में नौ नवंबर को दिए फैसले के खिलाफ दायर पुनर्विचार याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट बृहस्पतिवार को विचार करेगा। चीफ जस्टिस एसए बोबडे की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ दोपहर करीब 1:40 बजे 18 पुनर्विचार याचिकाओं पर इन-चैंबर सुनवाई करेगी। पीठ में चीफ जस्टिस के अलावा जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस अशोक भूषण, जस्टिस एसए नजीर और जस्टिस संजीव खन्ना शामिल हैं। जस्टिस खन्ना को छोड़कर बाकी सदस्य मामले में फैसला देने वाली संविधान पीठ का हिस्सा थे। जस्टिस खन्ना को 17 नवंबर को सेवानिवृत्त हुए सीजेआई रंजन गोगोई की जगह शामिल किया गया है। सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड जानकारी के मुताबिक, 18 पुनर्विचार याचिकाओं में नौ उन पक्षों ने दायर की हैं, जो पहले पक्षकार थे। बाकी नौ तीसरे पक्ष ने दायर की हैं। पीठ विचार करेगी कि याचिकाओं पर ओपन कोर्ट में सुना जाए या नहीं। पूर्व सीजेआई गोगोई की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने सर्वसम्मति से 2.77 एकड़ विवादित भूमि रामलला को देने का फैसला सुनाया था। साथ ही केंद्र को सुन्नी वक्फ बोर्ड को मस्जिद निर्माण के लिए पांच एकड़ जमीन देने का निर्देश दिया था।

पाकिस्तानी हिन्दू शरणार्थी ने अपनी नवजात बेटी का नाम 'नागरिकता' रखा

नागरिकता संशोधन विधेयक को राज्यसभा से भी मंजूरी मिल गई है। उच्च सदन में इस बिल के पक्ष में 125 वोट पड़े, जबकि 105 सांसदों ने इसके खिलाफ मतदान किया।

नई दिल्ली

नागरिकता संशोधन विधेयक लोकसभा में पारित होने के बाग राज्यसभा ने भी इस पर स्वीकृति की मुहर लगा दी। लेकिन इसके पहले पाकिस्तान से आई हिन्दू शरणार्थी ने अपनी दो दिन की बेटी का नाम 'नागरिकता' रखा है। दिल्ली की मंजू का टिला में रह रही महिला शरणार्थी का कहना है, "यह मेरी सबसे बड़ी इच्छा थी कि नागरिकता संशोधन विधेयक 2019 संसद में पारित हो।" देर रात तक राज्य सभा ने भी मंजू के दिल की बात को 125 सांसदों के समर्थन से स्वीकृति दे दी।

बुधवार को उच्च सदन में इस बिल के पक्ष में 125 वोट पड़े, जबकि 105 सांसदों ने इसके खिलाफ मतदान किया। बिल पर वोटिंग से पहले इसे सेलेक्ट कमिटी को भेजने के लिए भी मतदान हुआ, लेकिन यह प्रस्ताव गिर गया। सेलेक्ट कमिटी में भेजने के पक्ष में महज 99 वोट ही पड़े, जबकि 124 सांसदों ने इसके खिलाफ वोट दिया। इसके अलावा संशोधन के 14 प्रस्तावों को भी सदन ने बहुमत से नामंजूर कर दिया। अब राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद यह बिल ऐक्ट में तब्दील हो जाएगा। इस बिल को सोमवार रात को लोकसभा से मंजूरी मिली थी। दिलचस्प बात यह रही कि लोकसभा में बिल का समर्थन करने वाली शिवसेना के तीन सांसदनों ने राज्यसभा से वॉकआउट कर दिया। बता दें कि लोकसभा में बिल का समर्थन करने को लेकर महाराष्ट्र में उसके साथ सरकार चला रही कांग्रेस ने शिवसेना से ऐतराज जताया था। इसके अलावा बीएसपी के दो सांसदों ने भी वोटिंग का बहिष्कार किया।

धर्म के आधार पर न बंटवारा न होता तो न आता नागरिकता संशोधन बिल'

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि यदि देश का धार्मिक आधार पर बंटवारा न होता तो यह बिल न लाना पड़ता। अमित शाह ने कांग्रेस पर वार करते हुए कहा कि आखिर जिन लोगों ने शरणार्थियों को जख्म दिए हैं, वही अब जख्मों का हाल पूछ रहे हैं। उन्होंने कहा, 'यदि कोई सरकार पहले ही इस समस्या का समाधान निकाल लेती तब भी यह बिल न लाना पड़ता।' नागरिकता संशोधन बिल पास होने के बाद प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने कहा कि यह भारत के इतिहास में काला दिन है। इसके अलावा बिल पर वोटिंग का बायकॉट करने वाली शिवसेना के नेता संजय राउत ने कहा कि शरणार्थियों को नागरिकता दी जानी चाहिए, लेकिन उन्हें वोटिंग का अधिकार नहीं मिलना चाहिए। पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए गैर-मुस्लिम शरणार्थियों को इस बिल में नागरिकता देने का प्रस्ताव है। इस बिल में इन तीनों देशों से आने वाले हिंदू, जैन, सिख, बौद्ध, पारसी और ईसाई समुदाय के शरणार्थियों को नागरिकता का प्रस्ताव है। बिल पर कई विपक्षी सांसदों ने संशोधन प्रस्ताव दिए थे लेकिन वे सभी बहुमत के आधार पर अस्वीकृत कर दिए गए ।

कर्तव्य के मार्ग पर कायम रहने की शिक्षा देती है गीता: संघ प्रमुख

भगवद्गीता कंठस्थ करने वाले 81 छात्रों को गीताव्रती की उपाधि देकर स्वर्ण पदक से सम्मानित किया

संगमनेर, पुणे (विसंके)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि भगवद्गीता एक अलौकिक ग्रंथ है। गीता के ज्ञान के आधार पर भारत को विश्वगुरू बनाना संभव है. हर एक को अपने कर्तव्य के मार्ग पर कायम रखने की शिक्षा गीता से मिलती है। मानवीय जीवन की समस्याओं से विचलित हुए बिना उनसे निश्चयपूर्वक सामना करने की सीख गीता देती है। गीता यानी वैश्विक कल्याण का शाश्वत चिंतन है. सरसंघचालक गीता परिवार द्वारा गीता जयंती और गीता परिवार के संस्थापक स्वामी गोविंददेव गिरीजी महाराज के 71वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गीता महोत्सव में संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में योग महर्षि स्वामी रामदेव जी, स्वामी गोविंददेव गिरीजी महाराज सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

सरसंघचालक जी ने गीता परिवार द्वारा पिछले तीन दशकों के बाल संस्कार कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि गीता के उपदेश पर आचरण करना महत्त्वपूर्ण है। शरीर, मन, बुद्धि की एकरूपता लाने का कौशल गीता योग सिखाता है। मोह, आकर्षण, उपेक्षा और भय को कैसे मात दें और कर्तव्य पूरा करते हुए समाज के कल्याण में जीवन का सदुपयोग कैसे करना है, इसका मार्गदर्शन गीता से मिलता है। योग गुरु बाबा रामदेव ने छात्रों को योगी बनने और राष्ट्र के लिए उपयोगी होने का मौलिक संदेश दिया। उन्होंने कहा कि संगमनेर में स्वामी गोविंददेव गिरीजी महाराज की प्रेरणा से 33 वर्ष पूर्व डॉ. संजय मालपाणी द्वारा शुरू किया गया बाल संस्कार कार्य, संस्कार रूपी पुरुषार्थ है। गीता में जीवन का अहसास, ज्ञान और विज्ञान का अनोखा मिलाप

है। वास्तव में हम सब भारतीय देवताओं, वीरों और वीरांगनाओं के अंश हैं। आत्मग्लानि में न रहते हुए सबको योग साधना करते हुए अपनी आत्मशक्ति बढ़ाने की नितांत आवश्यकता है। उन्होंने कहा, कि सुदृढ़ पीढ़ी राष्ट्र की रीढ़ है। इसलिए हर एक को स्वस्थ, प्रसन्न, कार्यक्षम और उत्साही रहने के लिए नियमित योगासन करने चाहिए तथा विभिन्न आसन एवं प्राणायाम के प्रात्यक्षिक भी करवाए।

स्वामी गोविंददेव गिरी जी महाराज ने प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था समाप्त करवाकर उनकी शिक्षा व्यवस्था थोपी और उसके दुष्परिणाम देश को भुगतने पड़ रहे हैं, इसके कई उदाहरण उन्होंने दिए। उन्होंने कहा कि बालकों पर संस्कार करते हुए उनमें से विद्वान, विचारक और शूरवीर नरसिंह निर्माण करने के उद्देश्य से संगमनेर में गीता परिवार की स्थापना 33 वर्ष पूर्व हुई। स्वर्गीय ओंकारनाथ जी एवं ललिता देवी मालपाणी के सशक्त समर्थन से इस पौधे का 16 राज्यों में विस्तार हुआ है. गीता ग्रंथ जीवन शिक्षा देने वाला है। उन्होंने अपने भाषण में क्रांतिकारियों के कार्य का गौरवपूर्वक उल्लेख किया।